(16) ट्रेड–रेशम कीटपालन
कक्षा–12

उद्देश्य–

1–रेशम कीटपालन औद्योगीकरण द्वारा देश की बढ़ती हुई बेरोजगारी को दूर करना।
2–रेशम उत्पादन बढ़ाना, बिक्री बढ़ाना तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करना।
3–निर्धनों के लिये सम्पूर्ण वर्ष में निरन्तर आय का एक मात्र साधन।
4–कम से कम पूंजी लगाकर अधिकतम आय प्राप्ति का सुलभ साधन होना।
5–रेशम कीटपालन उद्योग में दक्षता प्राप्त कर भविष्य में जीविकोपार्जन हेतु सक्षम बनाना।
6–श्रम के प्रति आस्था उत्पन्न करने, आत्म–निर्भर बनाने एवं एक कुशल नागरिक निर्माण में सहायक होना।
7–उत्तम किस्म का रेशम उत्पादन कर विदेशी व्यापार में सहयोग तथा कुटीर उद्योगों में भारत की गरिमा बनाये रखने में सक्षम।
8–रेशम उत्पादन से सम्बन्धित रासायनिक पदार्थों, यंत्रों, उपकरणों तथा सेरी कल्चर का समुचित ज्ञान प्राप्त कर जीवन को उपयोगी बनाने में सहायक।

रोजगार के अवसर–

1–रेशम उद्योग इकाइयों में रोजगार मिलने की सम्भावना।
2–रेशम कीटपालन उद्योग में स्वरोजगार या अपना निजी व्यवसाय चलाना।
3–रेशम उत्पादन कर रेशम का वृहत् व्यापार कर सकता है, इसका होल–सेल या रिटेल सेल का कार्य कर सकता है।
4–विभिन्न प्रकार के रेशम उत्पादन, ग्रेडिंग, भण्डारण एवं बिक्री दुकान खोल सकता है।
5–रेशम की बनी वस्तुएं साड़ी इत्यादि का स्वतः निर्माण कर एक छोटा उद्योग चला सकता है।
6–रेशम कीटपालन उद्योग से सम्बन्धित यंत्रों, उपकरणों आदि का निर्माण एवं विक्रय उद्योग चला सकता है।

पाठ्यक्रम–

इस ट्रेड में तीन–तीन घन्टे के पांच प्रश्न–पत्र और प्रयोगात्मक परीक्षा भी होगी। अंकों का विभाजन निम्नवत् रहेगा–

	पूर्णांक		उत्तीर्णांक	
(क) सैद्धान्तिक–				
प्रथम प्रश्न–पत्र	60	300	20	100
द्वितीय प्रश्न–पत्र	60		20	
तृतीय प्रश्न–पत्र	60		20	
चतुर्थ प्रश्न–पत्र	60		20	
पंचम प्रश्न–पत्र	60		20	
(ख) प्रयोगात्मक–				
आन्तरिक परीक्षा	200	400		200
वाह्य परीक्षा	200			

टीप–परीक्षार्थियों को प्रत्येक लिखित प्रश्न–पत्र में न्यूनतम उत्तीर्णांक 20 तथा योग में 33 प्रतिशत अंक एवं प्रयोगात्मक परीक्षा में 50 प्रतिशत उत्तीर्णांक पाना आवश्यक है।

प्रथम प्रश्न–पत्र
(रेशम कीट के भोज्य पौधों की खेती)

(1) शहतूत की विभिन्न उन्नतिशील जातियों की जानकारी–उत्तर प्रदेश में होने वाली जातियों का नाम व ज्ञान। 16
(2) शहतूत के पौधों के लिये नर्सरी तैयार करना, भूमि का चयन, सिंचाई, खाद आदि की व्यवस्था। 14
(3) नर्सरी से पौधों का स्थानान्तरण–पौधों से पौधों की दूरी, भू–परिष्करण के प्रकार एवं पौध उत्पादन में महत्व।16
(4) शहतूत की खेती का आर्थिक दृष्टि से अध्ययन एवं महत्व। 14

द्वितीय प्रश्न–पत्र
(रेशम कीट जैविकी, पालक एवं भोज्य पदार्थों का संरक्षण)

(1) रेशम कीट के रोग व्याधियों की जानकारी, पहचान, रोक–थाम, रासायनिक पदार्थों का उपयोग रसायनों को तैयार करना एवं नियन्त्रण या उपचार। 8

(2) कीटों की सेवा ब्रसिंग की विधियां, विभिन्न आयु वर्ग के कीटों का पालन–पोषण की विधि। 8

(3) शहतूत के पौधों में लगने वाले विभिन्न रोगों की जानकारी, पहचान एवं रोकथाम तथा उपचार। 8

(4) कवक नाशक, कीटनाशी रसायनों की जानकारी, प्रयोग हेतु उसकी तैयारी, विधियों की जानकारी एवं सावधानियों का ज्ञान। 9

(5) शहतूत के रूप राट, रस्ट, लीफस्पाट, पाउडरी मिल्ड्यू, लक्षण एवं पहचान तथा उपचार। 9

(6) जैसिड्स, (Jassid) घिप्स बिहारी, हेयरी कैटर पिलर, दीमक, कटवर्म का अध्ययन, पहचान एवं रोक–थाम तथा रासायनिक नियन्त्रण। 9

(7) ग्रेसरी द्वारा क्षति, उसका अध्ययन एवं मूल्यांकन। 9

तृतीय प्रश्न–पत्र

(रेशम कीट बीजोत्पादन प्रौद्योगिकी)

(1) कीट का निकालना, लैंगिक भेदों की जानकारी, पेपरिंग का समय, द्वितीय पेपरिंग। 20

(2) कीट का परीक्षण–अण्डों को साफ करना, रोगाणु नाशकीय करना, अम्लीय उपचार, अण्डों का सेना। 20

(3) बीजोत्पादन का श्रेणीकरण आर्थिक महत्व विपरण। 20

चतुर्थ प्रश्न–पत्र

(रेशम निकालना, परीक्षण एवं कतान)

(1) सिल्कवेस्ट का एकत्रीकरण एवं सुरक्षित रखना, सिल्क का परीक्षण, उसकी कमी की जानकारी तथा उसकी क्षति का मूल्यांकन। 15

(2) प्रयुक्त होने वाले उपकरणों की देख–रेख एवं रख–रखाव। 15

(3) अच्छे धागा की पहचान एवं गुण नियन्त्रण। 15

(4)अनुपयुक्त रेषम धागा की उपयोगिता। 15

पंचम प्रश्न–पत्र

(रेशम प्रबन्ध एवं प्रसार)

(1) फसल बीमा, सहायता हेतु विभिन्न योजनाओं का ज्ञान। 16

(2) रेशम उद्योग एवं सहकारिता। 14

(3) रेशम विपणन–सिद्धान्त,मूल्यांकन,समस्यायें, रेगूलेड बाजार, गुण व अवगुण, मूल्यों का मानकीकरण।16

(4) प्रसार–उद्देश्य, प्रसार की विधियां, प्रशिक्षण एवं निरीक्षण व्यक्तिगत, सामूहिक सम्पर्क, श्रव्य–दृश्य प्रदर्शन का प्रयोग, तकनीकी संगठनों की जानकारी, बाई प्रोडक्टस का प्रयोग। 14

प्रयोगात्मक परीक्षा का पाठ्यक्रम

(प्रायोगिकी)

(1) हानिकारक जीवाणुओं की पहचान, संकलन।

(2) कीटों के पकड़ने के उपकरण।

(3) कोकुन की छंटाई।

(4) कोकुन का मूल्यांकन, अच्छे कोकुनों की पहचान।

(5) कतान के लिये निर्धारित उपकरण, उसका रख–रखाव, प्रयोग।

(6) आर्थिक संस्थानों की जानकारी।

(7) संस्थाओं द्वारा प्रदत्त सुविधाओं की जानकारी।

(8) रेशम उत्पादन केन्द्रों की जानकारी।

(9) विभिन्न कोकुनों के लक्षणों का ज्ञान।

(10) रेशम का विपणन–समस्यायें एवं समाधान।

प्रयोगात्मक परीक्षा की रूप.रेखा

समय–5 घण्टे

(क) प्रयोगात्मक परीक्षा–

(1) वाह्य परीक्षा–

परीक्षार्थियों को 3 प्रयोग दिये जायें–

प्रयोग संख्या 1 (दीर्घ प्रयोग)

प्रयोग संख्या 2 (लघु प्रयोग)

प्रयोग संख्या 3 (लघु प्रयोग)

(2) सतत् आन्तरिक मूल्यांकन–

(क) सत्रीय कार्य

(ख) कार्यस्थल पर प्रशिक्षण

नोट :–प्रयोगात्मक परीक्षा में उत्त्तीर्ण होने के लिए 50 प्रतिशत अंक पाना आवश्यक है।

पुस्तकें–

कोई पुस्तक निर्धारित या संस्तुत नहीं है। संस्था में प्रधान विषय अध्यापक से परामर्श ले पाठ्यक्रम के अनुरूप उपयुक्त पुस्तक का चयन कर लें।